गुरु नानक – सबद २६

अंत न सिफती कहण न अंत ॥

जप, गुरु नानक, गुरु ग्रंथ साहिब, ५

अंत न सिफती कहण न अंत ॥
अंत न करणै देण न अंत ॥
अंत न वेखण सुणण न अंत ॥
अंत न जापै किआ मन मंत ॥
अंत न जापै कीता आकार ॥
अंत न जापै पारावार ॥
अंत कारण केते बिललाहि ॥
ता के अंत न पाए जाहि ॥
एह अंत न जाणै कोइ ॥
बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
वडा साहिब ऊचा थाउ ॥
ऊचे उपर ऊचा नाउ ॥
एवड ऊचा होवै कोइ ॥
तिस ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
जेवड आप जाणै आप आप ॥
नानक नदरी करमी दात ॥२४॥

सार: अनजाने में, हममें असीम की खोज करने की सहज इच्छा होती है। जिस सच की हम तलाश कर रहे हैं वह असीमित है, लेकिन हमारी संवेदनाएँ सीमित हैं। वो चीज़ों को केवल तभी समझ सकती हैं जब कोई संदर्भ हो; जैसे गर्म और ठंडा, नर और मादा, दिन और रात, इत्यादि। दोहरेपन से सीमित, अज्ञानी अनजान मन वह खोजता है जो भीतर और बाहर हर जगह मौजूद है।

अंत न सिफती कहण न अंत ॥
महिमामंडन का कोई अंत नहीं है और व्यक्त करने का कोई अंत नहीं है।

अंत न करणै देण न अंत ॥
कर्मों का कोई अंत नहीं है और दान देने का कोई अंत नहीं है।

अंत न वेखण सुणण न अंत ॥
धारणाओं का कोई अंत नहीं है और आत्मसात करने का कोई अंत नहीं है।

अंत न जापै किआ मन मंत ॥
मन जिसे उपदेश मान लेता है, उसके जप का कोई अंत नहीं है।

अंत न जापै कीता आकार ॥
रचनाकार की कृतियों के बारे में मंत्र पढ़ने का कोई अंत नहीं है।

अंत न जापै पारावार ॥
असीम की सीमा का जप करने की कोई अंतिम सीमा नहीं है।

अंत कारण केते बिललाहि ॥
कई लोग असीमता के अंत को समझने की कोशिश करते हैं।

ता के अंत न पाए जाहि ॥
इसकी सीमा ज्ञात नहीं की जा सकती।

एह अंत न जाणै कोइ ॥
सर्वव्यापी अदृश्य जागरूकता की असीमता के बारे में कोई नहीं जानता।

बहुता कहीऐ बहुता होइ ॥
जितना अधिक कोई असीमता के बारे में कहता है, उतना ही अधिक जानने को मिलता है।

वडा साहिब ऊचा थाउ ॥
नेक लोग उच्च आध्यात्मिकता की स्थिति में रहते हैं।

ऊचे उपर ऊचा नाउ ॥
मानवता की उच्चतम स्थिति चिंतन के माध्यम से आयोजित किया जाता है।

एवड ऊचा होवै कोइ ॥
ऐसे चिंतन करने वाले, सदाचारी लोग दुर्लभ हैं।

तिस ऊचे कउ जाणै सोइ ॥
केवल वह ही सदाचारी होने की उत्कृष्ट स्थिति से परिचित हैं।

जेवड आप जाणै आप आप ॥
वह स्वयं के प्रति और अपने गुणों की महानता के प्रति जागरूक हैं।

नानक नदरी करमी दात ॥२४॥
नानक कहते हैं कि ऐसा दृष्टिकोण उनके करमों के आशीर्वाद के रूप में प्राप्त होता है। (२४)

तत्त्व: गुरु नानक का मानना है कि आध्यात्मिक ज्ञान असीमता को स्वीकार करने से आता है। अस्तित्व स्वयं को विविध रूपों में प्रस्तुत करता है, फिर भी यह असीमित चेतना का सीमित दायरा बना रहता है। हमारी शारीरिक पहचान और अहंकार हमें सीमित महसूस कराते हैं, लेकिन चिंतन हमें अपनी असीमता का एहसास कराने के लिए अपने जन्मजात गुणों से दोबारा जोड़ता है।